ज्ञान-योग के घृत से आत्मा की ज्योति जगती
इसलिए ज्ञान-योग का कंट्रास्ट समझना
अच्छी- रीति
बाप का कार्य प्रेरणा से चल सकता नही
तमोप्रधान बुद्धि प्रेरणा कैच कर सकती नही
कर्मेन्द्रियों को शांत और बनाना शीतल
फुल-पास होना तो यथार्थ याद से बनना पावन
मास्टर ज्ञान का सागर बनना ,बाप समान
नॉलेजफुल बन, स्वदर्शन चक्र फिराना
स्वरदर्शन चक्र रांग फिराया तो होगा परदर्शन
क्यों, क्या के स्वयं के रचे जाल में जाओगे उलझ
योगयुक्त, जीवन्मुक्त, चक्रवती बन
विश्वकल्याण की सेवा में चक्र लगाओ बाप संग
प्लेन बुद्धि से प्लैन को प्रैक्टिकल में ला बनना
सफल

ॐ शांति!!!
मेरा बाबा!!!